|| श्री स्वामी सामर्थ ||

|| श्री भैरव चालीसा ||

।श्री गणेशाय नमः।
।श्री स्वामी सामर्थाय नमः ।

॥ दोहा॥
श्री भैरव संकट हरन मंगल करन कृपालु ॥
करहु दया निज दास पे निशिदिन दीनदयालु ॥

॥ चौपाई॥
जय डमरूधर नयन विशाला । श्याम वर्ण वपु महा कराला ॥
जय त्रिशूलधर जय डमरूधर । काशी कोतवाल संकटहर ॥

जय गिरिजासुत परमकृपाला । संकटहरण हरहु भ्रमजाला ॥
जयति बटुक भैरव भयहारी । जयति काल भैरव बलधारी ॥

अष्टरूप तुम्हरे सब गायें । सफल एक ते एक सिवाये ॥
शिवस्वरूप शिव के अनुगामी । गणाधीश तुम सबके स्वामी ॥

जटाजूट पर मुकुट सुहावै । भालचन्द्र अति शोभा पावै ॥
कटि करधनी घुँघुरू बाजैं । दर्शन करत सकल भय भाजैं ॥

कर त्रिशूल डमरू अति सुन्दर । मोरपंख को चंवर मनोहर ॥
खप्पर खड्ग लिए बलवाना । रूप चतुर्भुज नाथ बखाना ॥

वाहन श्वान सदा सुखरासी । तुम अनन्त प्रभु अविनासी ॥
जय जय जय भैरव भय भंजन । जय कृपालु भक्तन मनरंजन ॥

नयन विशाल लाल अति भारी । रक्तवर्ण तुम अहहु पुरारी ॥
बं बं बं बोलत दिनराती । शिव कहँ भजहु असुर आराती ॥

एकरूप तुम शम्भु कहाये । दूजे भैरव रूप बनाये ॥
सेवक तुमहिं ,तुमहिं प्रभु स्वामी । सब जग के तुम अन्तर्यामी ॥

रक्तवर्ण वपु अहहि तुम्हारा । श्यामवर्ण कहुँ होइ प्रचारा ॥
श्वेतवर्ण पुनि कहा बखानी । तीनि वर्ण तुम्हरे गुणखानी ॥

तीनि नयन प्रभु परम सुहावहिं । सुरनर मुनि सब ध्यान लगावहिं ॥
व्याघ्र चर्मधर तुम जग स्वामी । प्रेतनाथ तुम पूर्ण अकामी ॥

चक्रनाथ नकुलेश प्रचण्डा । निमिष दिगम्बर कीरति चण्डा ॥
क्रोधवत्स भूतेश कालक्षर । चक्रतुण्ड दशबाहु व्यालधर ॥

अहहिं कोटि प्रभु नाम तुमहारे । जपत सदा मेटत दुःख भारे ॥
चौंसठ योगिनी नाचहिं संगा । क्रोधवान तुम अति रणरंगा ॥

भूतनाथ तुम परम पुनीता । तुम भविष्य तुम अहहु अतीता ॥
वर्तमान तुम्हरो शुचि रूपा । कालमयी तुम परम अनूपा ॥

ऐकादी को संकट टार्यो । साद भक्त को कारज सार्यो ॥
कालीपुत्र कहावहु नाथा । तब चरणन नावहुं नित माथा ॥

श्रीक्रोधेश कृपा विस्तारहु । दीन जानि मोहि पार उतारहु ॥
भवसागर बूढ़त दिनराती । होहु कृपालु दुषट आराती ॥

सेवक जानि कृपा प्रभु कीजै । मोहिं भगति अपनी अब दीजै ॥
करहुँ सदा भैरव की सेवा । तुम समान दूजो को देवा ॥

अश्वनाथ तुम परम मनोहर । दुष्ट कहँ प्रभु अहछु भयंकर ॥
तुम्हरो दास जाहाँ जो होई । ताकहँ संकट परे न कोई ॥

हरहु नाथ तुम जन की पीरा । तुम समान प्रभु को बलवीरा ॥
सब अपराध क्षमा करि दीजै । दीन जानि आपुन मोहिं कीजै ॥

जो यह पाठ करे चालीसा । तापै कृपा करहु जगदीशा ॥

॥ दोहा॥
जय भैरव जय भूतपति जय जय जय सुखकन्द ।
करहु कृपा नित दास पे देहु सदा आनन्द ॥
॥इति श्री भैरव चालीसा ॥

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
|| श्री स्वामी समर्थार्पण मस्तु||